

## पाठ 28 अध्याय 23 और 24

हम बालाम और बालाक की कहानी जारी रखते हैं, जो अपने आप में एक धार्मिक उत्सव है। कुछ महत्वपूर्ण बाइबिल सिद्धांत जिन्हें पवित्र शास्त्र के शेष भाग में आधारभूत सामग्री के रूप में गिना जाएगा, यहाँ हमारे सामने प्रस्तुत किए गए हैं और, उनमें से सबसे महत्वपूर्ण यह है कि एक झूठा भविष्यवक्ता कभी-कभी सही हो सकता है; इसके अलावा, परमेश्वर स्वयं अपने उद्देश्यों के लिए इस झूठे भविष्यवक्ता का उपयोग कर सकता है, यहाँ तक कि उसके साथ सीधे संपर्क भी कर सकता है।

बालाम हर मायने में एक झूठा भविष्यवक्ता था: वह एक भविष्यवक्ता, एक द्रष्टा और एक जादूगर था। वह जानता था कि इस्राएल के परमेश्वर की अपेक्षा की जानी चाहिए क्योंकि वह देवताओं के घेरे में था। इस कहानी में हमें याद दिलाया गया है कि दुष्ट व्यक्ति जालसाजी और नकल कर सकता है और चीजों को ऐसा दिखा सकता है जैसे कि जो कुछ हो रहा था वह यहोवा की ओर से आशीर्वाद था, न कि वह जो वास्तव में धोखा है।

पिछले सप्ताह हमने बालाम और उसके गधे के साथ हुई घटना पर चर्चा की थी। एक बोलने वाला गधा जो अपने रास्ते में खड़े प्रभु के दूत को देख सकता था, लेकिन बालाम नहीं देख सकता था क्योंकि यद्यपि वह आध्यात्मिक दुनिया से परिचित और करीब था, वह वास्तव में आध्यात्मिक रूप से अंधा था। यहाँ महान सबक दिए गए थे जिसमें यह वास्तविकता भी शामिल थी कि जब कभी-कभी हमारी इच्छाओं का मार्ग अवरुद्ध लगता है, तो इसके लिए कोई दिव्य कारण हो सकता है और, बुद्धिमान व्यक्ति रुककर प्रभु की तलाश करेगा, और उस व्यक्ति पर विचार नहीं करेगा जो केवल बाधा प्रतीत होता है, अनिवार्य रूप से समस्या है।

हमने यह भी देखा कि प्रभु हमारी स्वतंत्र इच्छा में हस्तक्षेप करने के लिए केवल एक सीमा तक ही जाने को तैयार है। यहोवा ने बार-बार बालाम से कहा कि वह नहीं चाहता कि वह मोआब के राजा बालाक के पास जाए और राजा के लिए इस्राएल को शाप देने का काम करे। फिर भी, बालाम बार-बार परमेश्वर के पास जाता रहा, हर बार यह उम्मीद करते हुए कि वह परमेश्वर को अपना मन बदलने के लिए मना सकता है: बालाम किसी भी तरह से "नहीं" को स्वीकार नहीं करने वाला था। समझें एक जादूगर द्वारा परमेश्वर से बातचीत करना केवल भविष्यवाणी करने का मानक तरीका था और बालाम को इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं होता कि क्या करना है और प्रभु से कैसे संवाद करना है, यदि यह एकमात्र तरीका नहीं होता जिससे वह परिचित था और, इसलिए, यहोवा ने बालाम को अपनी स्वतंत्र इच्छा का पालन करने की अनुमति दी, भले ही यह उसे ईश्वरीय

इच्छा के साथ असंगत बनाता हो, और, फिर भी, इन सबके माध्यम से परमेश्वर ने वह पूरा किया जो उसने इरादा किया था, कि इस्राएल को शाप नहीं दिया जाएगा, और वास्तव में वह आशीर्वाद जो यहोवा ने बहुत पहले इस्राएल पर घोषित किया था, उसकी पुष्टि होगी।

इसलिए, हम एक और आधारभूत ईश्वर सिद्धांत को स्थापित होते हुए देखते हैं; प्रभु मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा के माध्यम से अपनी योजना को चमत्कारिक रूप से पूरा करेंगे। यह रहस्य शायद सृष्टि या मोक्ष जितना ही बड़ा है यह कैसे संभव है कि प्रभु किसी दूसरे की पूरी तरह से स्वतंत्र इच्छा के माध्यम से अपनी इच्छा को पूरा कर सकते हैं। और अक्सर ऐसा होता है कि उस व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा ईश्वर की योजना के विरुद्ध होती है? फिर भी हम इसे न केवल बाइबिल में देखते हैं, बल्कि विश्वासियों के रूप में हमने इसे अपने जीवन में भी देखा है, लगभग हर दिन। जब हम अपने आस-पास देखते हैं, तो अपने अविश्वसनीय रूप से छोटे जीवनकाल में, हमने देखा है कि संसार उस लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा है जिसे प्रभु ने पहले से ही निर्धारित कर रखा था और हमें बता दिया था कि ऐसा होगा, फिर भी वह इसे प्राप्त करने के लिए दुष्टों और धर्मियों दोनों की स्वतंत्र इच्छा और योजनाओं का उपयोग करता है, केवल दुर्लभ अवसरों पर ही बलपूर्वक हस्तक्षेप करता है।

**आइये गिनती अध्याय 23:13 को अंत तक पुनः पढ़ें।**

**गिनती 23:13 को अंत तक पढ़ें**

हमने अभी जो पढ़ा है वह इस कहानी में परमेश्वर की दूसरी भविष्यवाणी है जो बालाम के मुँह से प्रस्तुत की गई है। पहली भविष्यवाणी जिसका हमने पिछले सप्ताह गिनती 23 की पहली आयतों में अध्ययन किया था, अनिवार्य रूप से इस्राएल की वर्तमान स्थिति को व्यक्त करती है (अर्थात्, इस्राएल को अन्य सभी राष्ट्रों से ऊपर परमेश्वर द्वारा आशीर्वाद दिया गया था, इस हद तक कि इसे सामान्य अर्थों में राष्ट्रों में से एक भी नहीं माना जाना चाहिए)। उस पहली भविष्यवाणी में, बालाम देखता है कि इस्राएल कितना धन्य और विशेषाधिकार प्राप्त है और इसलिए उम्मीद करता है कि वह किसी अनिर्धारित तरीके से, इस्राएल के आशीर्वाद में भाग ले सकता है। बालाम ने पहली भविष्यवाणी को यह कहकर समाप्त किया, " मैं धर्मी लोगों की मृत्यु मरूँ, और मेरा भाग्य उनके जैसा हो।"

मुझे आपको याद दिलाने की अनुमति दें कि इस्राएल का यह "आशीर्वाद" अब्राहमिक वाचा को फिर से बताने का एक और तरीका है। हमारे लिए यह समझना काफी उचित होगा कि बालाम का इससे क्या मतलब है (भले ही वह इसे पूरी तरह से नहीं समझ पाया होगा), वह यह है कि

वह इस्राएल के आशीर्वाद में शामिल होना चाहता है जो अब्राहमिक वाचा है। बेशक हमारे लिए +64,000 का सवाल यह है: एक गैर-इस्राएली (एक गैर-यहूदी) को परमेश्वर के साथ इस्राएल की सबसे खास वाचा के आशीर्वाद के तहत कैसे शामिल किया जा सकता है?

यह उन कई मौकों में से सिर्फ एक है जब बाइबल में गैर-यहूदी लोग इस्राएल की वाचाओं के अंतर्गत आने और लाभ उठाने की इच्छा व्यक्त करेंगे। बाद में और शायद सबसे प्रसिद्ध उदाहरण रूत (एक गैर-यहूदी महिला) थी, जिसने रूत 1:16 में परमेश्वर के साथ इस्राएल की वाचाओं में शामिल होने की अपनी इच्छा के बारे में कहा, **“तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तुम्हारा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।”** वैसे, रूत की कहानी और बालाम/बालाक प्रकरण के बीच एक दिलचस्प संयोग पर ध्यान दें जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, राजा बालाम मोआब का राजा था, और रूत एक मोआबी थी (बेशक मैं “संयोग” को मज़ाक में कह रहा हूँ)।

अब परमेश्वर की इस दूसरी भविष्यवाणी (बालाम के माध्यम से) में मेसोपोटामिया के भविष्यवक्ता और मोआब के राजा की पूरी कहानी के लिए एक केंद्रीय बिंदु बनाया गया है और वह यह है: जबकि अन्य सभी धर्म (सभी झूठे) देवताओं की इच्छा जानने के लिए जादू और टोना का उपयोग करते हैं, इस्राएल का परमेश्वर अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से अपनी इच्छा प्रकट करता है और यहोवा यह प्रत्यक्ष भविष्यवाणी के माध्यम से करता है, न कि जादुई शगुन के माध्यम से जैसा कि इस युग की सार्वभौमिक प्रथा थी।

इब्रानियों को एक ऐसा महान संसाधन दिया गया था जो बाकी दुनिया के पास नहीं था: प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन। बाकी दुनिया, क्योंकि उन्होंने सृष्टिकर्ता की आज्ञाकारिता छोड़ दी थी और मूल रूप से दुष्ट की पूजा कर रहे थे, अपने स्वयं के साधनों से अपने कई देवताओं की इच्छा को जानने की कोशिश कर रहे थे। अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने उन लोगों को नहीं छोड़ा जो उसकी तलाश करते हैं। हमारे पास ब्रह्मांड के परमेश्वर से सीधे जुड़ने के लिए हमारे भीतर पवित्र आत्मा है, और आज जब हम अध्ययन करते हैं तो हमारे हाथों में उसका सत्य का वचन है। हमारा काम यह निर्धारित करना नहीं है कि हमारी बाइबिल में क्या सत्य है और क्या नहीं, क्योंकि यह सब सत्य है। हमारा काम बस इसे सत्य के रूप में **स्वीकार** करना और आज्ञापालन करना है। हमारी चुनौती यह भी है कि हम सत्य को अपने जीवन में कैसे लागू करें, यह पता लगाना है और सृष्टिकर्ता के साथ हमारे रिश्ते के बारे में। हमें यह सोचने की ज़रूरत नहीं है कि दुनिया कैसे शुरू हुई, या मानव जाति कहाँ से आई, क्योंकि हमें यह बताया गया है। हमें अपने भविष्य के बारे में भी सोचने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हमें यह भी बताया गया है। जैसा कि मेरे

एक अच्छे दोस्त ने हाल ही में एक पत्रिका लेख में कहा: “जो लोग यह मानने का चुनाव करते हैं कि ‘शुरुआत में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया’ उनके पास जीवन की उत्पत्ति, उद्देश्य और पूर्णता को समझने का आधार है। जो लोग उस कथन को अस्वीकार करना चुनते हैं, वे जीवन में एक अंधे व्यक्ति की तरह अंधेरे कमरे में एक काली बिल्ली की तलाश में रहते हैं जो वहाँ नहीं है, कभी नहीं जानते कि वे कहाँ से आए हैं, वे कहाँ जा रहे हैं, या उन दो छोरों के बीच कैसे जीना है।”

परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता उन लोगों के लिए जादुई शगुन का अंत हैं जो उस पर भरोसा करते हैं। इस्राएल इस वास्तविकता को सीखने के शुरुआती चरणों में था, और जिस व्यक्ति का उपयोग परमेश्वर इस समय अपनी घोषणा करने के लिए कर रहा था, वह बालाम नामक एक गैर-यहूदी था, वह इस बिंदु को पूरी तरह से भूल गया। अब, इससे पहले कि कोई यहाँ मेरे लिए यह करे, मैं यह बताना चाहता हूँ कि वास्तव में इस्राएल को कुछ समय के लिए एक प्रकार के दिव्य उपकरण की अनुमति थी: उरीम और तुम्मीम, जिसे इस्राएल का महायाजक अपने एपोद पर रखता था। हालाँकि, अवधारणा कभी भी इन पत्थरों से सत्य का निर्धारण करने के लिए नहीं थी: बल्कि यह ऐसे मामले में परमेश्वर की इच्छा को इंगित करने के लिए थी जहाँ एक ईश्वरीय विकल्प प्रदान किया गया था। मैं आपको यह नहीं बता सकता कि ये दोनों पत्थर कैसे काम करते थे, और इस बारे में महान इब्रानी संतों के बीच बहुत असहमति है, न ही मैं (निश्चितता के साथ) आपको बता सकता हूँ कि परमेश्वर ने ऐसी चीज़ की अनुमति क्यों दी। हालाँकि मेरा अनुमान है कि हम अक्सर इस्राएल को परमेश्वर द्वारा एक अनुष्ठान या उपकरण का उपयोग करने की अनुमति (यहाँ तक कि निर्देश) देते हुए देखेंगे जो कि मूर्तिपूजक द्वारा उपयोग किए जाने वाले अनुष्ठान या उपकरण के समान है और मेरा अनुमान है कि इसका कारण यह है कि यदि प्रभु ने इस्राएलियों से यह अपेक्षा की होती कि वे ज्ञात संसार के प्रत्येक पारंपरिक सांस्कृतिक पहलू (जिन सांस्कृतिक पहलुओं के अनुसार वे सामान्यतः जीवन जीते थे) को तुरन्त भूल जाएँ और एक बिल्कुल नए तथा पूर्णतया अद्वितीय पहलू को अपनाएँ, तो इस्राएल पूरी तरह से भ्रमित हो जाता।

निश्चित रूप से माउंट सिनाई पर दिए गए कानून (तोरह) में स्वर्ग के राज्य की एक नई और अनूठी संस्कृति को स्थापित किया गया था, लेकिन ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे इस्राएल तुरंत इसके हर पहलू को अपना ले, और जब प्रभु ने इसे दिया तो वह इसे अच्छी तरह से जानता था। हम आधुनिक विश्वासियों के रूप में एक समान स्थिति में हैं। हम केवल इतनी ही तेजी से बढ़ सकते हैं, और चर्च (इतनी सारी विभिन्न संस्कृतियों से मिलकर बना हुआ) केवल इतना ही ग्रहण कर सकता है। इस प्रकार, जब समय सही होता है तो परमेश्वर हमें क्रमिक रूप से प्रकट

करता है। यह मुझे आश्चर्यचकित करता है कि वही बात जो बालाम ने 3300 साल पहले कही थी, और वही बात जो रूत ने कुछ सौ साल या उसके बाद कही (यह अवधारणा कि यदि गैर यहूदी लोग मानव जाति के लिए ईश्वर के आशीर्वाद में शामिल होना चाहते हैं तो उन्हें इस्राएल की अब्राहमिक वाचा के माध्यम से ऐसा करना होगा), कि अब केवल चर्च का एक बढ़ता हुआ लेकिन छोटा सा हिस्सा इसे समझना शुरू कर रहा है। यहोवा कहता है कि उसके साथ हमारा रिश्ता इस्राएल की वाचाओं और उनसे उत्पन्न होने वाली बातों पर आधारित है; और फिर भी, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के कुछ वर्षों के भीतर, चर्च ने इस बात को नकारने वाले सिद्धांत बनाए। केवल अब, आज, इस्राएल के अपने देश में लौटने के साथ ही इस गलत धर्मशास्त्र को पूर्ववत करने के लिए निकाय के भीतर एक आंदोलन शुरू हुआ है। लेकिन हमारे अंधेपन को दूर करने के लिए प्रभु के समय का इंतजार करना पड़ा।

पद 13 में, राजा बालाक ने फैसला किया कि एक और सेटिंग बालाम को इस्राएलियों को शाप देने के लिए प्रेरित कर सकती है। वह **सेडेह-जोफिम** नामक एक स्थान चुनता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "पहरेदारों का पहाड़।" यह एक निगरानी चौकी है, लेकिन इसका प्राथमिक उपयोग एक खगोलीय अवलोकन बिंदु और पक्षियों की उड़ान देखने के लिए एक स्थान के रूप में है: सितारे और पक्षी दोनों उस युग में मानक संकेत और शगुन थे। चूंकि यह स्थान एक "उच्च स्थान" भी है, इसलिए वेदियाँ बनाई गईं और देवताओं की पूजा की गई क्योंकि देवताओं की पूजा आमतौर पर पहाड़ियों की चोटी पर की जाती थी। यह उस तरह से अलग नहीं है जिस तरह से कैथेड्रल पूरे युगों में बनाए गए हैं, जिसमें वे अक्सर सबसे ऊँची संरचनाएँ होती थीं, इसलिए कैथेड्रल आमतौर पर एक स्थानीय प्रहरीदुर्ग के रूप में भी कार्य करता था, एक ऐसा स्थान जहाँ से भक्तों को पूजा करने के लिए बुलाया जाता था (अंततः वहाँ घंटियाँ लगाई गईं), और इसकी स्थापत्य शक्ति के कारण, यह अक्सर घेरे गए शहर के लिए अभयारण्य का स्थान होता था।

बालाक बताते हैं कि पहली पहाड़ी की चोटी से, जहाँ वह बालाम को ले गया था, इस्राएलियों के विशाल शिविर का केवल एक हिस्सा ही देखा जा सकता था: लेकिन इस दूसरे स्थान से और भी कम हिस्सा देखा जा सकता था। विचार यह है कि शायद बालाक को डराया गया था और कम लोगों को शाप देना उसके लिए ज्यादा पसंद हो सकता था। इन सबके बीच यह उम्मीद भी शामिल है कि जिस परमेश्वर से बालाम निपट रहा है, उसे भी मोआब के राजा की यह माँग स्वीकार करने के लिए परिस्थितियाँ ज़्यादा अनुकूल लग सकती हैं कि इस्राएल को शाप दिया जाए।

दूसरे प्रयास का परिणाम राजा बालाम के लिए पहले प्रयास जितना ही बुरा होता है। बालाम एक बार फिर यहोवा के निर्देश का पालन करता है कि वह अपने लोगों, इस्राएल को आशीर्वाद दे शाप न दे...। साथ ही ध्यान दें कि यहोवा बालाम को राजा बालाक की ओर निर्देशित करता है और यहोवा कहता है, बालाक सुनो, और तुरंत ही एक और ईश्वर-सिद्धांत घोषित किया जाता है: प्रभु मनमौजी नहीं है। वह बातें नहीं कहता और फिर उनका पालन नहीं करता। इसके साथ ही, पद 19 में, परमेश्वर कहता है कि वह बेन 'आदम नहीं है, जिसका अर्थ है "मनुष्य का पुत्र"। यह कहने का एक और तरीका है कि प्रभु कोई साधारण मनुष्य या नश्वर प्राणी नहीं है जो हमेशा अपना मन बदलता रहता है।

अब समझिए, यह बात बालाम और बालाक दोनों के कानों में बहुत अजीब लगी। कौन सा परमेश्वर है जो लगातार अपना मन नहीं बदलता ? मनमौजीयन तो देवी-देवताओं का स्वभाव है। इससे भी अधिक यह वह युग था जब अधिकांश राजाओं को किसी न किसी परमेश्वर का अवतार माना जाता था, इसलिए परमेश्वर का यह घोषित करना कि वह कोई बेन आदम नहीं है, स्थिति को वास्तव में उलझन में डाल देता है।

अब जबकि यहोवा ने अपने स्वभाव और चरित्र के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को स्पष्ट रूप से स्थापित कर दिया है, तो बालाम के माध्यम से प्रभु यह स्पष्ट करता है (फिर से) कि जिसे वह आशीर्वाद देता है, उसे कोई मनुष्य पलट नहीं सकता। इसलिए इस्राएल सुरक्षित है और मोआब को सचमुच इससे दूर रहने की जरूरत है।

जल्दी ही पद 23 में एक और धार्मिक सिद्धांत स्थापित हो जाता है: प्रभु ने न तो जादू की स्थापना की है और न ही वह अपने लोगों को उसके साथ व्यवहार करने के लिए एक स्वीकार्य तरीके के रूप में भविष्यवाणी की अनुमति देता है। इस्राएल के भीतर इसका अस्तित्व ही नहीं है। यह प्रभु के नियम और उनके आदर्श की अभिव्यक्ति है, दुर्भाग्य से वास्तविकता की नहीं क्योंकि वास्तव में इब्रानियों ने लगातार भविष्यवाणी और मूर्तिपूजा की ओर रुख किया, और इस घृणित कार्य के लिए उन पर भयानक दिव्य अनुशासन लगाए गए।

ईश्वर की ओर से दूसरी भविष्यवाणी इस बात के वर्णन के साथ समाप्त होती है कि इस्राएल में सिंह की शक्ति और क्रूरता थी (जो उस समय एक सामान्य रूपक था), तथा काव्यात्मक रूप से इस्राएल द्वारा अपने शत्रुओं का नाश करने का वर्णन किया गया है।

खैर, इस्राएल को शाप देने का दूसरा प्रयास पहले प्रयास से बेहतर नहीं रहा, है न? इस बार आशीर्वाद और भी अधिक शक्तिशाली और सटीक था और स्पष्ट रूप से घबराए हुए बालाक

ने बालाम से कहा, "यदि आप मेरे लिए उन्हें शाप नहीं देने जा रहे हैं, तो कम से कम उन्हें आशीर्वाद न दें।" बालाम ने दोहराया कि उसके पास वास्तव में इस मामले में कोई विकल्प नहीं है।

राजा बालाक (जो इस बात का आदी नहीं है कि लोग उसकी आज्ञा का पालन न करें) फिर भी हार नहीं मानता। वह बालाम से कहता है, चलो एक और कोशिश करते हैं, और बालाम को पोर की चोटी पर दूसरी जगह ले जाने के लिए स्वेच्छा से आगे आता है। हम अगले अध्यायों में पाएँगे कि यह निश्चित रूप से एक बाल को समर्पित और मूर्तिपूजक है। जिस तरह प्रभु ने कई मौकों पर बालाम से कहा कि वह नहीं चाहता कि बालाम, बालाक के पास जाए, उसी तरह अब बालाक को कई मौकों पर बताया गया है कि परमेश्वर अपना मन नहीं बदलने वाला है और अपने लोगों को शाप नहीं देगा। फिर से हम उस युग के मूर्तिपूजक दिमाग को काम करते हुए देखते हैं। राजा बालाक का मानना है कि वह देवताओं को अपने वश में करता है और शायद उसे इस परमेश्वर को थोड़ा और खुश करने की जरूरत है।

इसलिए वे पोर की चोटी पर जाते हैं, और वहाँ मौजूद सात वेदियों पर सात बलि रखी जाती हैं और सारा बेकार प्रयास फिर से शुरू हो जाता है।

## गिनती 24 पूरा पढ़ें

बालाक सोचता है, शायद तीसरी बार भी जादू चल जाए लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बालाम को समझ में आने लगा। आखिरकार यह समझ में आ गया कि यहोवा इस्राएल को आशीर्वाद देने के लिए प्रसन्न है, बालाम ने अपनी भविष्यवाणियाँ और शकुन देखना बंद कर दिया। जहाँ भी वे गए, बालाक और बालाम स्पष्ट रूप से इस्राएली छावनी का अधिकांश भाग देख सकते थे, निश्चित रूप से बालाक के मन में यही था क्योंकि जैसा कि उन दिनों में हर कोई समझता था, आप केवल उसी को शाप दे सकते हैं जिसे आप देख सकते हैं।

इसके बाद जो होता है वह पहले से थोड़ा अलग है। अब तक, हमें बताया गया है कि परमेश्वर ईश्वर ने सचमुच बालाम के मुँह में शब्द डाले। लेकिन इस बार, परमेश्वर की आत्मा बालाम पर टिकी हुई है और इसलिए बालाम वह नहीं बोलता जो परमेश्वर ने उसे बोलने के लिए कहा है, बल्कि वह वही बोलता है जो बालाम अब सत्य और वास्तविकता के रूप में जानता है। क्या आप अंतर देखते हैं? तीसरे ऑरेकल की प्रस्तुति के साथ जो कुछ हो रहा है वह नए नियम में जो हम पाते हैं उससे थोड़ा अधिक है, जिसमें यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके ऊपर परमेश्वर की आत्मा है जो एक सबक सिखा रहा है या एक समस्या को संबोधित कर रहा है। और अपने

शब्दों में शिक्षा और/या निर्देश दे रहा है, पहले ऐसा लगता था कि परमेश्वर सचमुच बालाम के मुँह को नियंत्रित कर रहे थे, या बालाम के कान में हर एक ध्वनि और उच्चारण फुसफुसा रहे थे जो बालाम को कहना था, ऐड लिब के लिए कोई जगह नहीं थी।

इसलिए (और कृपया इसे सुनें) खासकर नए नियम के प्रेरितों के मामले में हमें सही शब्द नहीं मिलते। लेकिन हमें सही सिद्धांत मिलते हैं। प्रत्येक प्रेरित का व्यक्तित्व उनके द्वारा कही गई बातों में झलकता है, और उनके द्वारा बोले गए शब्द उनके अपने मन को दर्शाते हैं। अब प्रभु ने उनके मन को सिखाया है इसलिए वे जो धर्मशास्त्रीय सिद्धांत के रूप में बोलते हैं वह पूर्ण सत्य है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे इसे आश्चर्यजनक तरीकों से समझाते हैं।

यीशु मसीह ने आश्चर्यजनक तरीके से बात की। यीशु मसीह ने ऐसे शब्द बोले जो इतने शक्तिशाली, परिपूर्ण और मार्मिक थे कि लोग आश्चर्यचकित हो गए और उन्हें सुनकर दंग रह गए। यह घोषित किया गया कि, "किसी भी व्यक्ति ने कभी इस तरह बात नहीं की।" प्रेरित यीशु की तरह स्पष्ट नहीं थे क्योंकि वे हमारे उद्धारकर्ता की तरह ईश्वर नहीं थे। यीशु समझ से परे की बातों को समझ सकते थे और इसे उन लोगों के लिए समझ में आने योग्य बना सकते थे "जिनके पास सुनने के लिए कान थे" (एक वाक्यांश जिसे वे अक्सर इस्तेमाल करते थे)।

मैं यह क्षणिक मोड़ इसलिए ले रहा हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप समझें कि संत पौलुस या पतरस के हर शब्द पर इस तरह अटके रहना कितना गलत है जैसे कि वे यीशु बोल रहे हों। उनके वाक्यों का विश्लेषण करना और यहाँ तक कि यह दिखावा करना कि उनके शब्द, उनके संदर्भ और उनकी संस्कृति से बाहर और ऊपर थे, यही वह चीज़ है जिसने चर्च के भीतर व्यापक रूप से भिन्न सिद्धांतों को जन्म दिया है। विशेष रूप से उच्च प्रशिक्षित रब्बी संत पौलुस को यहूदियों को यह समझाने का कठिन काम करना पड़ा कि यद्यपि तोरह पूरी तरह से बरकरार रहा, लेकिन यीशुआ के आगमन ने इसके अर्थ को और भी उच्च स्तर पर पहुँचा दिया। गैर-यहूदियों को उन्होंने स्वर्गीय चीज़ों को समझाने की कोशिश की। गैर इब्रानी लोगों को जिनके पास यह नहीं था।

परमेश्वर के लोगों के बीच पले-बढ़े होने के कारण, पौलुस ने ऐसी बातें कहीं, जिनके बारे में ये गैर-यहूदी कुछ नहीं जानते थे, लेकिन कोई भी यहूदी बच्चा यह जानता होगा क्योंकि उन्होंने 5 या 6 साल की उम्र में तोरह का अध्ययन करना शुरू कर दिया था। यह उन छात्रों को बीजगणित पढ़ाने जैसा होगा जिन्होंने कभी बुनियादी गणित भी नहीं सीखा और फिर, यहूदी और गैर-यहूदी दोनों के लिए पौलुस ने यह परिभाषित करने का प्रयास किया कि मसीहा के आने का क्या मतलब

है और इसे अपने जीवन में कैसे लागू किया जाए। पौलुस ने वाक्यांशों और विचारों को बनाने की कोशिश में कठिन उतार-चढ़ाव से गुज़रा, जो केवल शब्दों से नहीं समझा जा सकता; ऐसी चीजें जिनसे हम सभी अभी भी जूझ रहे हैं। जैसे कि हमारे उद्धार में वास्तव में क्या होता है, शाश्वत सुरक्षा क्या है, परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में हमारे कामों और कर्मों का क्या स्थान है। फिर भी यह उसका कठिन ईश्वरीय कार्य था। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं या बालाम की तरह (जिसने पहले प्रभु को उसके मुँह में सटीक ईश्वरीय शब्द डालने के लिए कहा था) पौलुस के शब्द आम तौर पर उसके अपने थे, हालाँकि परमेश्वर ने उन्हें प्रेरित किया था।

इसलिए बालाक की गाथा में हम सिक्के के दोनों पहलू देखते हैं। हम प्रेरणा के उदाहरण और रहस्योद्घाटन के उदाहरण देखते हैं। एक तरफ हम पुराने नियम के प्रकार के भविष्यवक्ता को देखते हैं, जिसके मुँह में परमेश्वर के वचन सीधे और सचेतन रहस्योद्घाटन के माध्यम से डाले गए हैं। दूसरी तरफ हमारे पास नए नियम के प्रकार के भविष्यवक्ता हैं, जो वचन के शिक्षक हैं, एक वचन (यदि आप चाहें तो एक प्रकार का शास्त्र) जो मनुष्य को पहले से ही दूसरों द्वारा दिया गया है जो उससे पहले आए थे; या उन बातों का परिणाम है जो परमेश्वर ने उसे सिखाई हैं, एक शिक्षक जिसका मन पूर्ण ईश्वरीय सत्य से प्रेरित है लेकिन जिसके शब्द उसके अपने हैं और इसलिए पूरी तरह सटीक नहीं हैं।

मैंने अभी जो कुछ भी बताया कि यह बालाम के अपने मन से निकला हुआ वचन है, उसकी पुष्टि पद 3 में होती है, जब यह शुरू होता है, ".... यह बालाम की वाणी (या वचन) है, एक ऐसे व्यक्ति की जिसकी आँखें खुल गई हैं जो यहोवा के वचनों को सुनता है" सी. जे. बी. जैसी हमारी कुछ बाइबलें, पद 4 में कहती हैं कि ये "एक ऐसे व्यक्ति के शब्द हैं जो गिर गया है।" यह वास्तव में हमें गलत विचार देता है क्योंकि इंजीलवादियों के बीच इसका अर्थ है "एक ऐसा व्यक्ति जिसने पाप किया है"; और इसका वास्तव में अर्थ है "एक ऐसा व्यक्ति जो आराधना में प्रभु के सामने गिर गया है"।

बाद में पद 4 में हम मूसा से पहले की बात करते हैं; उस समय से पहले जब प्रभु ने हमें अपना व्यक्तिगत औपचारिक नाम नहीं बताया था। यह उस समय की बात है जब लोग ईश्वर को एल शद्दाई के नाम से जानते थे। हमारे सी. जे. बी. ने इसे सही बताया है, अधिकांश संस्करण "सर्वशक्तिमान" या ऐसा ही कुछ कहेंगे। याद रखें कि अब हम जानते हैं (बहुत हाल ही में खोजों के कारण) कि एल शद्दाई का अर्थ है "पहाड़ का देवता"; और निश्चित रूप से इस समय हमारी

कहानी का सटीक संदर्भ यही है। आखिरकार यह तीसरा पर्वत शिखर है जिस पर बालाम को ले जाया गया है ताकि वह इस्राएल पर श्राप डाल सके।

अगले कई पदों में बालाम ने घोषणा की है कि यहोवा इस्राएल से कितना प्रसन्न है, वे उसमें कितने शक्तिशाली हैं। वे अब की तुलना में और भी अधिक प्रचुर होंगे, और प्रभु उन पर नज़र रखना और उन्हें आशीर्वाद देना कभी बंद नहीं करेंगे, और पद 9 में हमें वह संदेश मिलता है जो इस कक्षा में अक्सर दोहराया गया है और चर्च के बीच हर दिन दोहराया जाना चाहिए, धन्य हैं वे जो तुम्हें आशीर्वाद देते हैं और शापित हैं वे जो तुम्हें शाप देते हैं। मैंने सुना है कि "धन्य हैं वे जो तुम्हें आशीर्वाद देते हैं और शापित हैं वे जो तुम्हें शाप देते हैं" को चर्च पर इस्राएल और यहूदी लोगों की देखभाल करने की माँग के रूप में लागू करना शास्त्र का दुरुपयोग है क्योंकि यह केवल अब्राहम के तत्काल परिवार पर लागू होता है और इस्राएल तब तक बना भी नहीं था। लेकिन स्पष्ट रूप से यहाँ वही शब्द सीधे पूरे इस्राएल राष्ट्र पर लागू होते हैं, है न? इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि संरक्षित समूह कौन है (इस्राएल) और चेतावनी किस ओर निर्देशित है (गैर—यहूदी) इसलिए अगली बार जब कोई आपसे इस पर विवाद करने की कोशिश करे तो इस पद गिनती को कहीं लिख लें।

खैर राजा बालाक अब बहुत क्रोधित है। वह बालाम को घूरता है, घृणा से अपने हाथ आपस में थपथपाता है और बालाम को जाने के लिए कहता है, और बालाम वास्तव में खाली हाथ चला जाएगा क्योंकि उसने वह नहीं किया जिसके लिए उसे नियुक्त किया गया था, इस्राएल को शाप देना। समझिए यह बालाक के लिए एक बहुत बड़ा झटका है। अब उसे इस्राएल से लड़ना होगा (यदि वह उनसे लड़ने का निश्चय करता है) इस्राएल की सहायता के बिना, जो उनके शापित होने और / या उनके परमेश्वर द्वारा त्याग दिए जाने के माध्यम से कमजोर हो गया है।

लेकिन जैसा कि ऐसा लग रहा था कि राजा बालाम के लिए इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता, वैसा ही हुआ, क्योंकि न केवल बालाम ने मोआब के दुश्मनों को शाप दिया, बल्कि आशीर्वाद भी दिया, बालाम ने मोआब के लोगों और ट्रान्स यर्डन और कनान की भूमि में अन्य गैर—यहूदियों के लिए आने वाली अप्रिय नियति का वर्णन किया। फिर से ये शब्द बालाम के हैं, लेकिन उन्हें कहने के लिए वह ईश्वर से प्रेरित है।

जो शब्द आते हैं, उनमें अद्भुत मसीहाई आशा है, और वे भविष्य में होने वाले हैं। इसके साथ ही इस्राएल की जल्द ही आने वाली सैन्य जीत की भविष्यवाणी भी है। यह एक महत्वपूर्ण बाइबिल सिद्धांत है कि जब भविष्यवाणी की जाती है तो अक्सर यह एक बार नहीं, बल्कि दो बार,

यहाँ तक कि तीन बार भी होती है। यह निकट भविष्य में होता है, और फिर दूर भविष्य में, और बीच के समय में भी हो सकता है; और यह विशेष रूप से मसीहा के आने से संबंधित भविष्यवाणियों के संबंध में है और इसलिए हमें ऐसे शब्द मिलते हैं जो हमारे लिए परिचित हैं।" याकूब से एक सितारा उगता है, एक राजदंड इस्राएल से निकलता है।" प्राचीन मध्य पूर्व में राजाओं को अक्सर सितारों के रूप में संदर्भित किया जाता है। याकूब का यह राजा मोआब (आज, हम यर्डन के राज्य की बात कर रहे हैं) के निवासियों को गंभीर नुकसान पहुँचाएगा। एदोम को बंदी बना लिया जाएगा। अमालेक हमेशा के लिए मिटा दिया जाएगा।

पद 17 हमें यह पहचानने में थोड़ी परेशानी देता है कि यह "शेठ" या "शेट" कौन है। नवीनतम विद्वानों का मानना है कि इसका अनुवाद शट शट के रूप में किया जाना चाहिए। निश्चित रूप से यह आदम और हव्वा के तत्काल परिवार का उल्लेख नहीं कर रहा है। बल्कि मिस्र के कुछ हाल के दस्तावेजों में कुछ ऐसे लोगों के बारे में बताया गया है जो इसी समय सीमा के आसपास मोआब के क्षेत्र में रहते थे जिन्हें "शूटू" कहा जाता है, लगभग निश्चित रूप से वे ही हैं जिनका उल्लेख किया जा रहा है।

पद 18 में सेईर और एदोम को एक ही स्थान के रूप में पहचाना गया है क्योंकि सेईर एदोम के भीतर स्थित है।

अब पद 20 से शुरू होकर चीजें थोड़ी बदल जाती हैं, जबकि इस्राएली सेना एदोम और मोआब और शट के विनाश का कारण थी, सूचीबद्ध कई राष्ट्रों के विनाश को सामान्य रूप से इब्रानियों द्वारा सैन्य कार्रवाई के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है। इसलिए, हमें इसे किसी अन्य माध्यम से लाए गए ईश्वरीय निर्णय के रूप में लेना चाहिए, जैसे कि अन्य राष्ट्र। यहाँ इस्तेमाल किए गए लोगों और स्थानों के अधिकांश नामों की पहचान करना मुश्किल है, कित्तिम को भूमध्य सागर में एक द्वीप माना जाता है। अश्शूर का मतलब असीरियन साम्राज्य हो सकता है या नहीं भी हो सकता है, हालाँकि अश्शूर का इस्तेमाल बाद में निश्चित रूप से असीरिया (आधुनिक इराक) को इंगित करने के लिए किया जाएगा। संभवतः यह एक छोटी गोत्र है जो कुछ समय के लिए नेगेव में रहती थी।

वर्तमान में यह माना जाता है कि कित्तिम संभवतः फिलिस्तीनियों का पुराना नाम है। और यही लोग समुद्री लोगों के सामान्य नाम से भी जाने जाते हैं क्योंकि वे भूमध्य सागर के रास्ते पश्चिम से आते हैं और, लगभग 1200 ईसा पूर्व मिस्र के अभिलेखों से संकेत मिलता है कि समुद्री लोगों ने कनान के तटीय मैदान पर हमला किया, फिर दक्षिण की ओर बढ़े और सिनाई के ऊपरी

हिस्से में रहने वाले एबर पर हमला किया। इसलिए, बहुत संभावना है कि यह क्रूर फिलिस्तीनियों के आने की भविष्यवाणी कर रहा है, जो अपने सभी पड़ोसियों और अंततः इस्राएल के लिए एक भयानक परेशानी होंगे।

बालाम और बालाम की गाथा उनके अलग होने और घर वापस लौटने के साथ समाप्त होती है।

मैं इस सप्ताह का समापन एक विचार के साथ करना चाहूँगा जिसे हम सब अपने साथ लेकर जा रहे हैं; मुझे पता है कि आप में से बहुत से लोग इसे पहले ही स्वीकार कर चुके हैं लेकिन अन्य लोग इतने आश्वस्त नहीं हैं। मुझे लगता है कि बालाम और बालाम की गाथा गैर—यहूदी चर्च की एक भविष्यवाणी है। बालाम एक गैर— यहूदी है। वह एक आध्यात्मिक व्यक्ति है; वास्तव में वह ईश्वर का भय मानने वाला है, यानी वह पूरी तरह से इस्राएल के ईश्वर पर विश्वास करता है और उस पर ध्यान देता है।

वह इस्राएल के परमेश्वर की बातें सुनता है और इस्राएल के परमेश्वर को जानता है। फिर भी वह गैर—यहूदी परंपराओं और रीति—रिवाजों की अपनी लंबी विरासत को खारिज नहीं कर सकता जो तोरह और यहोवा के अन्य शास्त्रीय आदेशों के साथ बहुत ही विपरीत हैं।

बालाम एक आध्यात्मिक रूप से उन्मुख गैर—यहूदी है जो जानता है कि इस्राएल के पास एक शक्तिशाली ईश्वर है, और उसे इस ईश्वर से व्यक्तिगत निर्देश मिले हैं कि इस्राएल के साथ उसका रिश्ता कैसा होना चाहिए (उनके साथ एकजुट होने और ईश्वर की वाचाओं के आधार पर उन्हें आशीर्वाद देने का रिश्ता)। ईश्वर बालाम को यह स्पष्ट करता है कि उसने पहले ही इस्राएल को आशीर्वाद दे दिया है (यह एक तय सौदा है) और इस तरह इसे किसी भी व्यक्ति या गैर—यहूदी राष्ट्र द्वारा पलटा नहीं जा सकता है और ईश्वर इस्राएल को एक धन्य लोगों के रूप में देखना कभी बंद नहीं करेगा। वह कभी भी इस्राएल को स्थायी रूप से शाप नहीं देगा, और वह किसी का भी विरोध करेगा जो उसके लोगों को शाप देने की कोशिश करता है।

परमेश्वर ने बालाम से कहा कि इस्राएल के पास एक शानदार भविष्य है क्योंकि उन्हें परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त है। बालाम ने कहा कि वह उस धार्मिकता में मरना चाहता है जो यहोवा ने इस्राएल के लोगों को दी है।

और फिर भी हम पाते हैं कि जब बालाम, परमेश्वर के शत्रु मोआब के राजा की सेवा करने के लिए मोआब की यात्रा करता है, तो यहोवा उसे बार—बार चेतावनी देता है। किसी तरह यह

बौद्धिक वियोग है (बालाम इसे एक अधेपन के रूप में वर्णित करता है जो अंततः दूर हो गया) जिसके कारण वह यह समझ नहीं पाता कि वह एक गैर-यहूदी राष्ट्र के लिए सेवा नहीं कर सकता जिसका उद्देश्य इस्राएल को कमजोर करना या नुकसान पहुँचाना है, और साथ ही इस्राएल के परमेश्वर का उचित सम्मान करना और उसके साथ सामंजस्य स्थापित करना है। लेकिन इसने उसे कई मौकों पर प्रयास करने से नहीं रोका।

बालाम गैर-यहूदी वर्चस्व वाले चर्च का एक अद्भुत मॉडल है। क्या आप इसे देखते हैं? मुख्यधारा के संस्थागत चर्च का कहना है कि अब इस्राएल का कोई शानदार भविष्य नहीं है, इसके बजाय यह शानदार भविष्य अब गैर यहूदी चर्च का है। सबसे सर्वव्यापी और स्वीकृत चर्च सिद्धांत कहते हैं कि ईश्वर ने इस्राएल को त्याग दिया है, अपने लोगों को हमेशा के लिए अस्वीकार कर दिया है, उन्हें शाप दिया है और उनके स्थान पर हम गैर यहूदी विश्वासियों को आशीर्वाद दिया है और चर्च इस मामले में बहुत ही गलत है। मसीह में भाइयों और बहनों, यह सोचना पूरी तरह से आत्म-विनाशकारी मूर्खता है कि हम इस्राएल को सक्रिय रूप से आशीर्वाद देने के अलावा कुछ भी कर सकते हैं। विश्वासियों के पास हमेशा ऐसा करने का स्पष्ट अवसर नहीं था, लेकिन अब हमारे पास है। इस्राएल का एक राष्ट्र के रूप में पुनर्जन्म मात्र 60 साल पहले तक नहीं हुआ था, इसलिए प्यार करने और बचाव करने के लिए इस्राएल का कोई राष्ट्र नहीं था। जाहिर है कि यहूदियों के फैलाव की सदियों के दौरान (विशेष रूप से इस्राएल के पुनर्जन्म से पहले) चर्च का यह स्पष्ट कर्तव्य होना चाहिए था कि वह उनके साथ खड़ा हो और उन यहूदी परिवारों से दोस्ती करे जब उन्हें हमारी सबसे अधिक आवश्यकता थी, लेकिन हमने ऐसा नहीं किया।

हमें कभी भी इस्राएल के कट्टर शत्रुओं की सहायता या नैतिक समर्थन नहीं करना चाहिए (जैसा कि बालाम ने करने का इरादा किया था) और इसे निष्पक्ष या प्रेमपूर्ण और दयालु कहना चाहिए, और यह सोचना चाहिए कि किसी तरह यह इस्राएल को शाप नहीं दे रहा है। बालाम व्यक्तिगत रूप से इस्राएल को नुकसान नहीं पहुँचाने वाला था, वह केवल इस्राएल के शत्रु (मोआब) की सहायता करने जा रहा था और फिर घर चला गया। परमेश्वर ने उससे कहा कि यदि वह ऐसा करता है, तो उसे उसे मारना होगा।

हम फिलिस्तीनियों को रसद और पैसा नहीं भेज सकते, या उनकी ओर से इस्राएल पर राजनीतिक दबाव नहीं डाल सकते, और फिर किसी तरह यह दावा नहीं कर सकते कि बाइबिल का ईश्वर इसे एक योग्य और पवित्र कार्य के रूप में अनुमति देता है। हमें धर्मनिरपेक्ष शब्द के साथ मिलकर इस्राएल को उस भूमि को विभाजित करने के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए जो

परमेश्वर ने उन्हें वाचा में दी थी, या इस बात पर जोर नहीं देना चाहिए कि इस्त्राएल मुसलमानों को उनकी राजधानी के रूप में दे, वही स्थान जहाँ हमारे मसीहा स्वर्ग से लौटने पर फिर से कदम रखेंगे, या इस्लाम को एक मूर्तिपूजक मंदिर और पूजा केंद्र बनाए रखने की अनुमति दें जहाँ कभी परमेश्वर का मंदिर था और फिर से होगा, और फिर यह कहें कि चूँकि हमारा दिली इरादा शांति है इसलिए ये सब करना हमारे परमेश्वर की नजर में सही होना चाहिए।

अगर बालाम जाग सकता है और रोशनी देख सकता है, तो चर्च भी ऐसा ही कर सकता है। अगर बालाम आखिरकार समझ सकता है कि इस्त्राएल गैर-यहूदी राष्ट्रों की तरह नहीं है, कि परमेश्वर कोई इंसान नहीं है जो अपना मन बदल ले, कि जब वह कोई वादा या वाचा करता है तो वह उसे पूरा करता है और कि प्रभु खुद उस व्यक्ति को शाप देता है जो उसके खास लोगों, इस्त्राएल को शाप देता है, तो हमारे भाई भी आखिरकार इसे समझ सकते हैं। आइए हम यह सुनिश्चित करने के लिए अपना काम करें कि यह जल्द ही हो।